42 P
292
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1393
10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 292

(T) 18.1

891.431
Sh23 B

बन्दे मातरम

भारत माँ के ज़ख्मीलाल

अर्थात

प्रकाशक व संग्रह [illegible]

आर. एन. [illegible]

तृतीयबार १०००   सम्वत [illegible]   मूल्य ।)

66
IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
30 MAR 1931

बन्दे मातरम

जोशीला खून

दोहा

भारत के वर वीर गण सज्जन सभ्य सुजान
दर्द वतन सुन लीजिये ज़रा लगाकर ध्यान

चौबोला

ज़रा लगाकर ध्यान विप्र भूदत्त एक था नामी
गवर्नमेन्ट का भक्त रात दिन करता फिरे गुलामी
तमगों से भरपूर और था वह ज़ुल्मों का बानी
नमक हरामी भारत का जिन लई शीश बदनामी

क़व्वाली

मिसर था एक घर जिसके नाम घनश्याम कहलावे।
सदाचारी बड़ा भारी दिलावर जो न दहलावे ॥
थी जिस की नौजवानों की नसों में खून जोशीला
रंगा था देश के रंग में भरा था भाव भड़कीला ॥
छोड़ कालेज को आकर वह लगा भारत की सेवा में
वह बाहर और भीतर से रंगा भारत की सेवा में ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 292
Date 6.12.51
GOVT. OF INDIA

बना सत्याग्रही पक्का बढ़ा भारत की सेवा में
विकट साहस के घोड़े पर चढ़ा भारत की सेवा में

दोड़:-

पिता के उर में खटका, पकड़ कर उसको झटका
वचन कोंवे झुक झोला,
करके आंखें लाल तमक कर सख़्त सखुनयों बोला

जवाब पिता का

बहर तवील

तेरे दिल में समाई है क्या यह बता,
मेरी रोज़ी को यूं तू गुमाने लगा।
मैं तो कुर्सी नशीं था तू कुर्सी मेरी,
हाय। अपने ही हाथों डिगाने लगा॥
मैं तो जानूं था रुतबा बढ़ायेगा तू,
उलटा तू ही मुझे है गिराने लगा।
अपनी ख़िदमत क़दीमी को तज करा पिसर
तू तो गांधी की ख़िदमत बजाने लगा॥

जवाब पुत्र का

तुम तो शैतानी चक्कर में आये पिदर,
तुम को गांधी के गुरा की ख़बर नहीं।
तुम तो लालच के फन्दे में ऐसे फंसे,
तुम्हें अपने वतन की ख़बर ही नहीं॥
हम तो भारत के योधा हैं सच्चे सही,
हमें मरने का ख़ौफ़ो ख़तर ही नहीं।
हम तो आये हैं मरने को मानो पिदर!
लाए कंधे पे अपने हैं सर ही नहीं॥

जवाब पिता का

मेरी मानो कही ऐ पिसर तुम सही,
ऐसी बातों में कोई सहारा नहीं।
रोटी जिसकी नज़र से है मिलती हमें,
उससे लड़ना हमारा गवारा नहीं॥
करो ख़िदमत उमर भर गवरमेन्ट की,
ऐसा मौका है आना दुबारा नहीं।
सच्ची जानो पिसर! यह हकूमत भली,
बिना इसके हमारा गुज़ारा नहीं॥

जवाब पुत्र का

जब से आकर टिकी यह हकूमत यहां,
तब से भारत दुखों का खज़ाना हुआ।
भूखे मरते हैं लाखों किरोड़ों यहां,।
मिलना दुश्वार है दाना दाना हुआ॥
चलती गौओं पे तीखी छुरी रात दिन,
दूध घृत के बिना बिलबिलाना हुआ।
तुम बताते हो अच्छी हकूमत जिसे,
ढंग उसका अजब ज़ालिमाना हुआ॥

जवाब पिता का

मैं ने जाना कि मानेगा अब तू नहीं,
तुझ को दी खेअर जेलखाना हुआ।
तूने तोपों तमंचों को जाना नहीं,
बेटा! अभी तक इसको पिछाना नहीं॥
तेरी ताक़त है क्या जो लड़े इससे तू,
तेरा होगा कहीं भी ठिकाना नहीं।
यह जो दुनियां को बर्बाद करते फिरें,

इनकी बातों में हरगिज़ तू आना नहीं ॥

जवाब पुत्र का :-

यह चढ़ा रंग पुख्ता न सकता उतर,
जी तो ठाना है कर के दिखाऊंगा मैं ।
तुम जो मुझ को डराते हो परवाह है क्या,
सारे भारत के भय को हटाऊंगा मैं ॥
जेल खाने में जाऊंगा जाऊंगा मैं,
गोली सीने में खाऊंगा खाऊंगा मैं ।
ऐसी ज़ालिम हकूमत को बर्बाद कर,
देश आज़ाद अपना बनाऊंगा मैं ॥

जवाब पिता का

मैं जान गया तू पागल हुआ दिवाना ।
है मुश्किल तेरा अरे ! होश में आना ॥
मेरे पुत्र ! छोड़ दे तू ये गन्दे ख्याल ।
राजद्रोहियों के संग में क्यों होता है पामाल ॥

जवाब पुत्र का :-

पागल बताओ चाहे मुझे दिवाना।
एक रोज़ तुम्हें भी इधर पड़ेगा आना॥
मेरे पिता देख कर माता का अपमान।
बैठे होकर मौन हैं वो जीती संतान॥

जवाब बबिका

दोहा-पिता पुत्र की वारता सुनकर के इस तौर।
आ माता घनश्याम को लगी कहन कर जोर॥

जवाब कमला का

दोहा-कहां गंवाई प्राणपति! तुमने अकल तमाम।
नाम डुबाते बड़न का खुद होते बदनाम॥
चौ०-खुद होते बदनाम लोभ में ही डूबे जाते हो।
होकर ऋषि संतान शान में धब्बा लगवाते हो॥
ग़ज़ब सितम अफ़सोस ख़ौफ़ ना ईश्वर का खाते हो
देख दुर्दशा माता की ना दिल में शरमाते हो॥
दौ०-मान पति मेरी लीजे, ख्याल कुछ दिल में कीजे,
गुलामी तोड़ बगाओ,
कर सेवा भारत माता की देश भक्त कहलाओ॥

जवाब पतिका

दोहा- क्या समझती है मुझे ऐ नारी नादान।
मात पिता गुरु से बड़ी राज भक्ति ले जान॥
चौ०- राज भक्ति ले जान प्रजा का धर्म यही है प्यारी।
तन मन अरु धन से राजा की करना ताबेदारी॥
करे सामना राजा का हो उनकी जग में ख्वारी।
पड़ें जेल में वे भोगेंगे तन पर संकट भारी॥
दौ०- राज है यह सुखकारी, प्रजा का है हितकारी।
समझ मन माहिं स्यानी,
सिंह और बकरी पीते हैं एक घाट पर पानी॥

जवाब कमला

गीत गाते हो जिस राज के प्राण पति!
नाश उस राज ने ही हमारा किया।
जो भी था पास में छीन हम से लिया,
छोड़ा कुछ भी नहीं खून तक पी लिया॥
बे गुनाहों पे होते जुल्म रात दिन।
देश भक्तों को जेलों में है भर दिया।

फिर भी अच्छी करतातेलजातेनहीं,
डूबजाओ पिया डूबजाओ पिया ॥

जवाब पति का

क्यों तू करती है बक बक चलाती ज़बां,
तेरी बातों में कोई असर ही नहीं।
जो करे सामना इस बृटिशराज्यका,
ऐसा दुनियां में कोई बशर हीनहीं ॥
तुम तो पागल हुये माता बेटा दोऊ,
तुम्हें अच्छे बुरे की ख़बर ही नहीं।
मानजाओ न बातें बनाओ यहां,
ऐसा लाना ज़बां पर ज़िकर हीनहीं ॥

जवाब कमला

ला०-गर है पसन्द तुम करते रहो .गुलामी।
हाकिमलोगों की भरते रहो सलामी ॥
हम माता बेटा तुम से होते न्यारे।
जब तक कि रहेंगे आप .गुलामी प्यारे ॥
मेरे नाथ! पहनकर चूड़ी बैठो धाम।

मैं सत्याग्रह व्रत धारण कर करूं देश का काम॥
इस तर्ज़ हुकूमत को बरबाद करूंगी।
निज प्राण लगा भारत आज़ाद करूंगी॥
मेरे नाथ! बचाऊंगी माता की शान।
पुत्र सहित भारत पे देदूं अपने हंस२ प्राण॥

(क्रमशः)

प्रतिज्ञा

संसार को देंगे दिखा हम देश पर कुरबान हैं।
परवा नहीं कुछ भी हमें हम देश पर कुरबान हैं
बलिदान होना मैं ने सीखा है पतंगे से अहो!
चिन्ता नहीं होवें भसम हम देश पर कुरबान हैं॥
लड़ना पड़े यदि काल से भी देश भारत के लिये
तो जीत लेंगे उसको भी हम देश पर कुरबान हैं॥
लाखों सहें हम आपदा पर मुख न मोड़ेंगे कभी।
पिस पिस के चटनी होंगे हम देश पर कुरबान हैं॥
इस देश भारत के लिये यदि जेल में जाना पड़े।
साबित वहां भी हम करेंगे देश पर कुरबान हैं॥

तोपों की तीक्ष्ण बाढ़ से भय खा नहीं सकते कभी
हम रोक देंगे सीना अपना देश पर कुरबान हैं
स्वाधीनता के पक्ष में हम प्राण देंगे हे प्रभो।
हंसते हुए हम जल मरेंगे देश पर क़ुरबान हैं॥

मर जायेंगे

देश हित पैदा हुए हैं देश पर मर जायेंगे
मरते मरते देश को ज़िन्दा मगर कर जायेंगे
हम को पीसेगा फ़लक चक्की में अपनी कब तलक
ख़ाक बन कर आंख में उसकी बसर कर जायेंगे
कर रही बर्गे ख़िज़ां को बादे सर सर दूर क्यों
पेशवाए फ़स्ले गुल हैं ख़ुद समर कर जायेंगे
ख़ाक में हम को मिलाने का तमाशा देखना
तुख़्मरेज़ी से नये पैदा शजर हो जायेंगे॥
नौ नौ आंसू जो रुलाते हैं हमें उनके लिये
अश्क के सैलाब से बरपा हशर हो जायेंगे॥
गर्दिशे गरदाब में डूबें तो कुछ परवा नहीं।
बहरे हस्ती में नई पैदा लहर कर जायेंगे

क्या कुचलते हैं समझ कर वह हमें बर्गे हिना
अपने ख़ूं से हाथ उनके तरबतर कर जायेंगे
नक़्शे पा हैं क्या मिटाता तू हमें पीरे फ़लक।
रहबरी का काम देंगे जो गुज़र कर जायेंगे॥

हिन्दोस्तां हमारा

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।
हम बुलबुलें हैं उसकी वह गुलसितां हमारा
गुर्बत में हों अगर हम रहता है दिल वतन में।
समझो हमें वहीं पर दिल हो जहां हमारा
पर्बत वह सब से ऊंचा हमसाया आसमां का
वह सन्त्री हमारा वह पासबां हमारा॥
गोदी में खेलती हैं जिसके हज़ारों नदियां
गुलशन है जिनके दम से रश्के जिनां हमारा
ऐ आबे रोदे गंगा वह दिन हैं याद तुझको
उतरा तेरे किनारे जब कारवां हमारा॥
मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा॥
यूनान, मिस्र, रोमा, सब मिट गये जहां से

अब तक मगर है बाक़ी नामोनिशां हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं मिटाये
सदियों रहा है दुश्मन दौरे ज़मां हमारा ॥
"इक़बाल" कोई महरम अपना नहीं जहां में
मालूम क्या किसी को दर्दे निहां हमारा ॥

ध्वजा

उठाये ध्वजा देश की हम फिरेंगे ।
उसी के लिये हम जियेंगे मरेंगे ॥
गुंजायेंगे नभ को मधुर गीत गाकर ।
बितायेंगे जीवन को सच्चा बनाकर ॥
उठावेंगे आवाज़ सच्ची सदा हम ।
बनायेंगे फिर स्वर्ग संसार को हम ॥
मिटायेंगे झगड़े कलह और लड़ाई ।
जगत प्रेम की फिर फिरेगी दुहाई ॥
वही प्रेम-गंगा यहां फिर बहेगी ।
जगज्जाल की ताप-मला हरेगी ॥
कहेगा इसे भक्ति से विश्व सारा ।
यही वृद्ध भारत गुरू है हमारा ॥

छप गया! छप गया!! छप गया!!!

क्या

बिलखती विधवा

नाटक

आगरे में क्रान्ति

जिस का पहिला एडीशन हाथों हाथ बिक गया

एक अग्रवाल सेठ का छोटी उम्र में अपने बेटे की शादी करना। शादी के चन्द दिन बाद लड़के का देहांत होजाना। उसकी विधवा स्त्री पर सास नन्द का अत्याचार। उसका अत्याचार सहते २ घर से निकलने का विचार करना। वह विचार ससुर को मालूम होना। सुसर का विधवा को ज़हर देने का विचार। ईश्वरी कोप से सुसर का ख़ुद ज़हर पीलेना। बाद में सौतेली सास का उस को घर से निकालदेना। विधवा का प्रोहित के पास जाना और पुनर्विवाह के लिये प्रार्थना करना। प्रोहित का विरोध। इस पर विधवा का अदालत में जाना और एक देश भक्त की मारफ़त नेशन पर दावा। सनातन धर्मियों का घोर विरोध

अदालत में दोनों तरफ़ की बहसें। शास्त्रोक्त प्रमाण, विधवाकारी मांच कारी ब्यान, जूरियों की राय, अदालत का जजमेन्ट पढ़ने लायक़ है॥

यह नाटक २०००की जनतामें "आनन्द-नाटक" की तरफ़ से आगरे में खेला जाचुका है और **ग्वालियर महाराज** ने भी अपने नाटक घर में छपने से प्रथम खिलाया था। पूरे हालात पढ़िये गा। पृष्ठ संख्या २५० है। अन्दर अदालत का चित्र और तीन अन्य चित्र हैं। टाइटिल पर तिरंगा चित्र। मूल्य ।।।) डाक खर्च अलग। चार पुस्तक मनी आर्डर से दाम भेजने पर ६) रू० में मिलेंगी॥

यदि आप बेरोज़गार हैं तो

निराश न हों

यदि आप बेरोज़गार हैं और स्वतन्त्रता से जीवन व्यतीत करना चाहते हो तो आप हमारे यहां के १६ सुफ़े के ट्रैक्ट क्यों न मंगाकर बेचते हो। १६ सुफे के ट्रैक्ट २।।) सैकड़ा

व १५) [२०] हज़ार थोक व्योपारियों को भेजे जाते हैं। बिना बिकी पुस्तकें वापिस कर लेते हैं। व्योपारियों की मांग व लाभ का विशेष ध्यान रक्खा जाता है। इस के अलावा बम्बई, मथुरा, हाथरस, बनारस, लाहौर आदि का थोक माल बिक्री के लिये तैयार रहता है॥

राष्ट्रीय झंडा	-)	झांसी की रानी	-)
आज़ादी का बिगुल	-)	शारदा बिल	-)
क्रान्ति की लहर	-)	गांधी की तोप	-)
नमक का इतिहास	-)	लल्लू का चचा	-)
सत्याग्रह की तोप	-)	नकली साधू	-)
शहीदों की याद	-)	दिलरवती विधवा	-)
सुदर्शन चक्र	-)	विधवा दुःख दर्शन	≡)
कांग्रेस के महापुरुष	१।)	ज़ख्मी भारत	-)
राष्ट्रीय देवियां	-)	अंग्रेज़ी अक़लगुम	-)

हर क़िस्म की पुस्तकें मिलने का पता

अग्रवाल बुक डिपो

खारी बावली

देहली,